ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-2* May- 2017
Anthology : The Research

मकबूल फिदा हुसैन की शैलीगत विशेषताएँ

सचिन केसरवानी
सहायक अध्यापक,
कला विभाग,
आदर्श ग्राम सभा इण्टर कालेज,
कौशाम्बी

आभा गुप्ता
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
जुहारी देवी इण्टर कालेज,
कानपुर

सारांश

मकबूल फिदा हुसैन एक ऐसा नामचीन शख्स जो आधुनिक भारतीय चित्रकला में प्रसिद्ध कलाकारों में से एक हैं, उनको इस प्रसिद्धि के लिए एक लम्बा समय तय करना पड़ा। उनको छोटी उम्र में वो मुकाम नहीं मिला जो 1950 में 35 वर्ष की उम्र में जब उन्हें सम्मान मिला। तो उनके सामने दो रास्ते थे। एक तो अपने साथ कलाकारों रजा और सूजा की तरह न तो वे विदेश गये न ही पाकिस्तान। आज ये तीनों कलाकार कला के प्रमुख स्तम्भ हैं। भारतीय जिन्दगी से अगर कोई कलाकार सबसे अधिक जुड़ा रहा तो वह निर्विवाद हुसैन हैं। हुसैन के बारे में जब हम सोचते हैं तो एक तो उनकी कला दुनियाँ अधिक विस्तृत है और साथ ही उनमें आम भारतीय जीवन के सपने और संघर्ष हैं।

उनका व्यक्तित्व लम्बे, छरहरे शरीर वाले एक ऐसे कलाकार की है, जिनका चेहरा भी हिन्दुस्तान की जमीन जैसा ही सादा है, लेकिन उर्वर है और उसकी उर्वरता को उनकी वह लम्बी दाढ़ी भी नहीं छिपा पाती, जो उनकी पहचान दुनियाँ में बन चुकी है। उनका व्यक्तित्व साफ–सुथरा पन्ना है, जिसकी लिखावट सब पढ़ सकते हैं, समझ सकते हैं कही कोई बनावट छिपाव नहीं हैं। गहराई की पर्ते उनके भीतर नहीं है जिनके भीतर झाँकना बहुत आसान है। कॉफी हाउस में बैठे लम्बे–लम्बे डर भरते हुए वे हुसैन उसी तरह दूर से पहचाने जा सकते हैं, जैसे उनके चित्र।

हुसैन के अपने व्यक्तित्व में देहाती कला, प्राचीन मिस्री, मुगलिया, मीनाकशी, चीनी सुलिपि, शरीर रचनाशास्त्र और भारतीय समीक्षकों के आधुनिक आग्रह, इन सबके सम्मिश्रण से दिखाई देता है।

हुसैन ने इन विभिन्न प्रभावों को एक विनम्र और संयत शैली में संजोया है और वे अपनी कला में वीभत्स विलक्षणता नहीं आने दते हैं, जो कई समसामयिक भारतीय कलाकारों द्वारा विशिष्ट मानी जाती है। आज हुसैन भारतीय कला जगत के सिरमौर हैं और कॉरपोरेट जगत के महानतम लोगों की दृष्टि में किसी चमत्कार से कम नहीं है।

मुख्य शब्द : भारतीय आधुनिक चित्रकला, मकबूल फिदा हुसैन, नामचीन शख्स, स्वर्ण भालू, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, कारपोरेट, इन्टेलेक्चुअल।

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय चित्रकला में हुसैन की कला इन सभी जटिल परिवर्तनों में से एक है, जो पिछले 50 वर्षों में भारत की चित्रकला में घटित हुए हैं। चाहे यथार्थवादी चित्रांकन से लेकर 19वीं शताब्दी की ब्रिटिश अकादमिक परम्परा से प्रभावित शैली हो और चाहे रूपाकार के मामले में आधुनिक युग के विरूपण को अपनाने तक हुसैन की कला का अपना योगदान रहा है। ये अनिवार्यता घनवादी और अमूर्त शैलियों या फिर इन दोनों के मिश्रित प्रभाव कहे जा सकते हैं। उनकी कला भारत की जटिल युगीन अभिव्यक्ति है।

वे सतत नये–नये प्रयोगों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों में से एक है। उनकी प्रारम्भिक कला का आधार जैन चित्र थे, परन्तु अब उनका दृष्टिकोण पूर्ण सूक्ष्मवादी बन चुका है। उनको जापान में प्रदर्शित चित्रों पर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उनकी कृतियां देश–विदेश में सराही गई हैं। उनके चित्र आज संसार के अनेक प्रसिद्ध कला दीर्घाओं में पहुंच चुके हैं।

आधुनिकता के दौर में हुसैन ने एक तो शुरू में प्रोग्रेसिव आर्टिट ग्रुप के साथियों के साथ मिलकर आधुनिक भारतीय कला को एक नया व्यक्तित्व और जीवन दिया, लोगों का आधुनिक कला की ओर ध्यान खींचा और विदेश से आधुनिक भारतीय कला की नकली संबंध को काफी हद तक तोड़ा। दूसरा, हुसैन ने कला को अन्य दूसरी विधाओं से जोड़ा–वो भी काफी सजग रूप में। तीसरा हुसैन ने खुद कहा कि 'कला केवल शहर वालों के लिए ही क्यों? गांव

वालों के लिए क्यों नहीं? गांव वालों की बौद्धिक जिज्ञासा किसी तरह से कम नहीं है, न ही उनकी समझ।'

आज हुसैन अन्तर्राष्ट्रीय रूचि वाले आधुनिक भारतीय कला के प्रतीक बन चुके हैं। वह सामाजिक विषमता को अक्सर विरूपित या विकृत मानव आकृतियों, घोड़ों तथा अन्य पदार्थों द्वारा अंकित करते हैं। वे असाधारण तरीके से महत्वपूर्ण घटनाओं को अपने सौन्दर्य विचारों के साथ तो कभी–कभी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति को रंगों तथा रूपाकारों के साथ प्रस्तुत करते हैं।

आज के समय में हुसैन की कला को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर देखने की आवश्यकता है। इन्हीं आवश्यकताओं से प्रेरित होकर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय आधुनिक चित्रकला के इतिहास में एम0एफ0 हुसैन की शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन करना तथा उसके महत्व को प्रकाश में लाना तथा जो तथ्य प्राप्त होते हैं। उसके आधार पर निष्कर्षों को प्राप्त करना।

शोध प्रविधि

1. ऐतिहासिक
2. सर्वेक्षण

उपर्युक्त प्रस्तावित उद्देश्यों में प्राप्त करने हेतु जिन उपकरण, संसाधन व विधि का सहयोग लिया गया है व निम्नवत् है –

उपकरण

1. कम्प्यूटर
2. वेबसाइट

स्त्रोत (द्वितीय)

1. उपलब्ध साहित्य
2. पत्र पत्रिकायें

प्राक्कल्पना

भारतीय आधुनिक चित्रकला के इतिहास में एम0एफ0 हुसैन की शैलीगत विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने की प्राक्कल्पना का निर्माण किया गया है।

सैद्धान्तिक आधार

ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति की सहायता से शोध के प्रति निष्कर्षों को प्राप्त करना जिसमें प्राप्त द्वितीय स्त्रोत की सहायता से प्राक्कल्पना की पुष्टि करना व उद्देश्य को प्राप्त करना।

प्रदत्तों का विश्लेषण

हुसैन ने भारतीय जिन्दगी को बहुत ही करीब से अमीरी–गरीबी और यथार्थ–अयथार्थ में कुछ इस तरह से एक लम्बे समय तक देखा है, कि अचानक जो मिल जाता है उसके पीछे बहुत कुछ होता है।

हुसैन का जन्म पंढरपुर (महाराष्ट्र) में 1915 में हुआ था। वे गरीब सुलेमानी बोहरा परिवार में जन्मे थे। बचपन में ही मां–बाप का साया इनके सिर से उठ गया और छः साल की उम्र में नाना के घर भेज दिये गये, जहां इन्हें धार्मिक संस्कार मिले। किशोरावस्था में इन्दौर आ गये। इन्दौर में 17 साल की उम्र में एक कला प्रदर्शनी में इन्हें स्वर्ण पदक मिला। इन्दौर में कला शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जे0जे0 स्कूल मुम्बई में दाखिला लिया। वहीं सिनेमा का पोस्टर बनाते हुए पढ़ाई करते। हुसैन को सिनेमा से शुरू से ही लगाव था। इस पर उन्होंने खुद ही टिप्पणी की थी कि ''मैं घोड़े बेचता हूं–फिल्में बनाता हूँ'' उन्होंने दो फिल्मे बनाई सिजमें गजगामिनी और मीनाक्षी है। इसके अलावा 1968 में हुसैन की लघु फिल्म ''टू द आइज ऑफ ए पेंटर'' को बर्लिन फिल्म महोत्सव में ''स्वर्ण भालू'' पुरस्कार मिला।

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप से जुड़ने के बाद इनका वास्तविक कलाकार जीवन प्रारम्भ होता है। हुसैन की असाधारण और चमत्कारिक सफलता के पीछे उनके काम की अदम्य शक्ति है। हुसैन को मुम्बई के कला जगत में 1947 में मुम्बई आर्ट सोसाइटी की वार्षिक कला प्रदर्शनी में एक पुरस्कार मिला। 1950 में हुसैन ने मुम्बई में अपनी पहली एकल प्रदर्शनी की। 1955 में इनको पहला राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। भारत सरकार द्वारा भी ये पद्भूषण तथा पद्मश्री से सम्मानित किये गये। इसके बाद इन्हें एक के बाद एक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान मिलते रहे।

हुसैन ने तैल चित्र, जलरंग, म्यूरल आदि विभिन्न माध्यमों में लोक जीवन को उतारने की कोशिश की। उनकी कला में भारतीय एवं पश्चिमी दोनों ही कला का आत्मसात मिलता है। उनके सर्वश्रेष्ठ चित्रों में ''दो स्त्रियों का संवाद, मकड़ी और लैम्प के बीच, जमीन, घोड़ा, ढोलकिया, मदर टेरेसा, बैलगाड़ी, वापसी, दुपट्टों में तीन औरत, इमेज ऑफ द ब्रिटिश राज, थिएटर ऑफ द एब्सर्ड (1990) जो हिंसा के खिलाफ टिप्पणी है आदि चित्र प्रमुख हैं। इसके अलावा हिन्दू देवी–देवताओं, रागमाला, नृत्य, महाभारत, रामायण, राजस्थान आदि अनेक श्रृंखलाओं को अपनी कला का प्रेरक शक्ति बनाया।

हुसैन के चित्र लोक कला शैली पर आधारित है। इनकी शैली वैयक्तिक तथा बौद्धिक हैं फिर भी आकृति निर्माण व रंगों में पुनरावृत्ति देखने को मिलता है। हुसैन की आधुनिक शैली में चित्रित रागमाला, चित्रावली, संगीत अमूल्य देन है।

बुनियादी तौर पर हुसैन प्रतीकवादी चित्रकार हैं। 1948 के लगभग वे यथार्थवादी थे। फिर घनवादी से आरम्भ करके सम्पूर्ण विकृति तक धीरे–धीरे पहुंचे हैं। वे आकृति को सरल बनाने के लिए विकृति करते हैं। छाया प्रकाश के बजाय विरोधी रंग के चौड़े धब्बे लगाकर आकृति में दृढ़ता उत्पन्न की है, जिससे एक ओजपूर्ण शैली का निर्माण हुआ है।

हुसैन के चित्रों में जीवन का विराट उत्सव देखने को मिलता है, जिसके बारे में कहना कठिन होगा। पश्चिमी कला (खासतौर पर अभिव्यंजनावादी चित्रकारों) से भी वे सीखते रहे। हुसैन ने हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही स्रोतों से बहुत कुछ लिया है। एक तरफ अभिव्यंजनावादी चित्रकार और पिकासों हैं, दूसरी तरफ अमृता शेरगिल, जार्जकीट, मिनियेचर कला, भारतीय मूर्ति शिल्प की अत्यन्त समृद्ध परम्परा, भारतीय ग्रामीण व लोकजीवन की विस्तृत धारा है, जो इनकी कला शैली में दिखाई पड़ती है।

हुसैन की शैली में मोटी रेखाओं से घिरी आकृतियों में दैनिक जीवन के सैकड़ों चित्र तथा रेखाचित्र देखने को मिलते हैं। जिसमें गाय, बैल, हाथी, घोड़ों आदि की आकृतियों की भिन्नता के साथ प्रस्तुत करने में ख्याति प्राप्त की है।

उनके रंगों में धुंधले, मटमैले नारी–पुरूषों में से नारी आकृतियों को चित्रित कर हुसैन ने अपनी विशिष्ट शैली का विकास किया, जो 'हुसैन शैली के नाम से जानी जाती है। 'स्त्री देह का मांसल सौन्दर्य, उनका प्रिय विषय रहा है और यही भाव उनके चित्रों में उभर कर आता है। भारतीय शिल्प में 'उन्नत वक्षयुक्त नारी' की प्रतिमा उन्हें आकर्षित करती हैं उनका मानना है कि स्त्रियाँ कष्ट झेलती हैं, उनके नेत्रों में दया और सीने में प्रेम का भाव होता है। उनके चित्रों में जब नग्न नारियों की आकृतियों के चित्रण की बात आती है तब वे कहते हैं कि उनके चित्रों की नग्न नारी में 'मन्दिर कला का भाव' है।

हुसैन की कला पर हमेशा खतरा मंडराता रहा है कि कहीं वे बहुत अधिक अलंकारिक न हो जायें। कहीं बहुत अधिक साहसी न हो जायें, और कहीं यह अशक्त न हो जाय। उनके काम में आकारिक रंग तथा रंगों के पैटर्नों का एक–दूसरे पर आच्छादित होना बौद्धिक प्रयास ही रहे हैं। यह वस्तुतः उनकी विशिष्ट शैली ही रही है रूपाकारों को लेकर उनकी अविष्कारशील और नवीन अन्तर्दृष्टि के कारण किसी आकृति के छायादार भाग या रंग वाले भाग एक–दूसरे को काटते दिखाई देते हैं, जिसकी वजह से छायाकृतियाँ खण्डित रूपाकारों में बदलती रहती हैं। चालीस के दशक से ही हुसैन ने यथार्थ तथा अमूर्तन को बड़ें आकर्षक तरीके से एक साथ मिला देने का प्रयास किया है।

यूरोप, अमेरिका, चीन एवं जापान आदि देशों के भ्रमण से उनकी कला में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिलता है। हुसैन अपने चित्र में मुख्य आकृतियों को पिकासों जैसी नीग्रों कालीन ऐंठनयुक्त रंगों की मोटी परतों में व स्पष्ट रेखा में चित्रित करते हैं।

उन्होंने प्रारम्भ में संश्लेषणात्मक घनवाद का इतना सीमित प्रयोग किया है कि उससे उनके चित्रों के विषय में प्रतिपादन को हानि नहीं पहुंचती। उन्होंने चित्रों के विषय को भारतीय समसामयिक जीवन तथा पौराणिक गाथाओं से लेकर प्रतीकता के साथ चित्रित किया है।

इस आधुनिक कला नायक की एक खासियत यह भी है कि ये हर बार किसी न किसी विवादों से घिरे देखने को मिलते हैं। कभी नंगे पैर फकीराना सूरत लिये तो कभी माधुरी दीक्षित के सौन्दर्य के प्रति दीवानगी दिखाते हुए, तो कभी देवी–देवताओं के नग्न चित्रण करते हुए, किन्तु उनकी शक्तिशाली रंगों की सघनता में साहस व उभरी काली रेखाओं द्वारा मानवीय स्वरूप की कल्पनात्मक चेतना की सच्ची झलक देखने को मिलती है।

राम कुमार ने हुसैन के व्यक्तित्व और कला के संबंध में (1967 के लेख में) एक महत्वपूर्ण बात कही थी ''अपनी कमजोरियों और सीमाओं को भी छिपाने की वे कभी कोशिश नहीं करते, वे 'इन्टेलेक्चुअल' से बहुत घबराते हैं। कला संबंधी बहसों और झगड़ों में भी वे कभी भाग नहीं लेते।''

निष्कर्ष

अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आधुनिक भारतीय कला में हुसैन जैसे नामचीन शख्स का बहुत बड़ा योगदान रहा। भारतीय कला में उन्हें 'आधुनिकता का कर्णधार' कहा जाय, चाहे 'आधुनिक कला नायक' हुसैन की जो एक कलाकार के रूप में छवि है उसे अस्वीकारा नहीं जा सकता।

वे प्रारम्भ में जैन कला शैली से शुरूआत करते हुए लोकवादी शैली, प्रतीकवादी, यथार्थ–अतियथार्थवादी फिर घनवादी से आरम्भ करके सम्पूर्ण विकृति की ओर धीरे–धीरे पहुंचते हैं। इनके अभिव्यंजनावादी चित्र पाश्चात्य अभिव्यंजना से अलग हैं। इन्होंने पश्चिम कला से भी बहुत कुछ सीखा। पिकासों, अमृता शेरगिल, जार्जकीट, भारतीय मूर्तिशिल्प, मिनियेचर कला आदि से भी ये प्रभावित रहे।

आकृतियों में कुछ अस्पष्टता, रूपाकारों में रंग एवं रेखा का महत्व, बारीक रेखायें, रंगों के हल्के बल, छाया प्रकाश के स्थान पर विरोधी रंगों के चौड़े धब्बे लगाकर आकृतियों में दृढ़ता उत्पन्न की है, जिससे ओजपूर्ण शैली का निर्माण हुआ।

स्वतंत्र एवं मनमौजी कलाकार के रूप में पहचाने जाने वाले हुसैन चित्रकारी के साथ सायरी में भी शौक रखते हैं। तो इस प्रकार के स्वतंत्र कलाकार के रूप में ये शैली में कैसे बँध सकते हैं? और जैसा चाहे वैसा चित्रित कर सकते हैं। फिर भी वे बार–बार शैली बदलना पसन्द नहीं करते हैं। वे अपने एक निजी ढंग पर ही कार्य करते रहना चाहते हैं, फिर भी उनके चित्रों में प्रतीकों की पुनरावृत्ति देखने को मिलती हैं। लेकिन आज उनका दृष्टिकोण पूर्णरूप से सूक्ष्मवादी बन चुका है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डा0 गिरिराज किशोर अग्रवाल – आधुनिक भारतीय चित्रकला पृष्ठ संख्या : 148–151*
2. *डा0 अविनाश बहादुर वर्मा –भारतीय चित्रकला का इतिहास पृष्ठ संख्या : 292*
3. *विनोद भारद्वाज –वृहद् आधुनिक कला कोश पृष्ठ संख्या : 87–91*
4. *प्राणनाथ मागो –भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य पृष्ठ संख्या : 148–149*
5. *डा0 रामकुमार विश्वकर्मा –भारतीय चित्रांकन पृष्ठ संख्या : 186*
6. *डा0 शेखर चन्द्र जोशी –आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृष्ठ संख्या : 124*